$\frac{\Delta D}{\Delta a} = \frac{1}{r}$

उपर्युक्त समीकरणों में $\frac{1}{r}$ **जमा गुणक** है।

इस तरह जमा गुणक न्यूनतम रिजर्व अनुपात के विलोम के बराबर होता है।

समीकरण $\Delta D = \frac{1}{r}.\Delta a$ इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि यदि प्रारम्भिक दशा में किसी एक बैंक की नकदी में Δa मात्रा से वृद्धि हो अथवा जमा बढ़े तो सम्पूर्ण बैंकिंग व्यवस्था में नकदी में वृद्धि के कारण कुल बैंक जमाओं में वृद्धि $\frac{1}{r} \times \Delta a$ के बराबर अर्थात् जमा गुणक गुना होती है। **जमा गुणक से साख मुद्रा गुणक ($\Delta M/\Delta a$) को व्युत्पन्न करने के लिए जमा गुणक $\frac{1}{r}$ में से एक को घटा देना चाहिए। अर्थात्, $\frac{\Delta M}{\Delta a} = \frac{1}{r} - 1$ यह साख मुद्रा गुणक अर्थव्यवस्था में बैंकिंग प्रणाली की साख मुद्रा निर्माण की इष्टतम क्षमता को प्रदर्शित करता है।**

मान्यताएं—उपर्युक्त साख गुणक विश्लेषण निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है :

1. बैंकें अपनी अधिकतम सीमा के बराबर तक साख निर्मित कर देती हैं।
2. न्यूनतम रिजर्व अनुपात सभी बैंकों के लिए समान रहता है।
3. साख के रूप में प्राप्त हुई राशि पूरी की पूरी आकर बैंकों में जमा हो जाती है अर्थात्, गैर-बैंकिंग लेनदारों के पास साख मुद्रा का कोई हिस्सा नहीं रहता है।
4. साख निर्माण की प्रक्रिया उस समय तक चलती है जब तक कि प्रारम्भिक दशा में किसी एक व्यापारिक बैंक की नकदी में बढ़ोत्तरी, सम्पूर्ण बैंकिंग व्यवस्था की आवश्यक रिजर्व मात्रा में नहीं बदल जाती है।

व्यावहारिक रूप में उपर्युक्त मान्यताएं अवास्तविक होती हैं। दैनिक लेन-देन के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए बैंक अपनी जमाओं का कुछ प्रतिशत नकदी के रूप में अपने पास संचित रखती हैं। इसके अतिरिक्त ऋणों के द्वारा व्युत्पन्न जमाओं के कुछ प्रतिशत भाग को उधारकर्ता बैंकों से नकदी के रूप में वापस ले लेते हैं। बैंक जमाओं का वह भाग जिसको उधारकर्ता बैंकों से नकदी के रूप में वापस ले लेते हैं बैंकिंग प्रणाली से बाहर निकल जाता है तथा बैंकों के द्वारा साख मुद्रा निर्माण अथवा जमा विस्तार के लिए अनुपलब्ध हो जाता है। यदि यह मान लिया जाए कि न्यनूतम वैध रिजर्व अनुपात के अतिरिक्त बैंक अपने पास जो अतिरिक्ति नकदी दैनिक लेन-देन एवं आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु रखते हैं वह कुल जमाओं का एक स्थिर अनुपात अथवा प्रतिशत होता है तथा यदि वह नकदी भी जिसे जनता अपने पास रख लेती है वह कुल बैंक जमाओं का एक स्थिर प्रतिशत अथवा अनुपात होती है तथा इन दोनों अनुपातों को क्रमशः b तथा p के द्वारा प्रदर्शित किया जाए तब, समीकरण $\frac{\Delta D}{\Delta a} = \frac{1}{r}$ निम्न स्वरूप ग्रहण कर लेता है :

$$\frac{\Delta D}{\Delta a} = \frac{1}{r+b+p}$$

सामान्यतया $r + b + p$ का संयुक्त अंकीय मूल्य 1 से कम तथा शून्य से अधिक और धनात्मक होगा। अर्थात् $0 < r+b+p < 1$

प्रत्यय $\frac{1}{r+b+p}$ को **जमा विस्तार गुणक** कहा जा सकता है।

क्या बैंक वास्तव में साख का निर्माण करते हैं? (Do Banks really create Credit?)

आधुनिक अर्थशास्त्रियों में इस विषय पर कुछ मतभेद पाया जाता है कि क्या बैंक वास्तव में साख का निर्माण करते हैं।

प्रथम विचारधारा—प्रो. हार्टले विदर्स (Hartley Withers), **प्रो. जे. एम. केन्ज, प्रो. सैयर्स** और **प्रो. हॉम** जैसे अर्थशास्त्रियों का मत है कि बैंक साख का निर्माण करते हैं।

द्वितीय विचारधारा—किन्तु **प्रो. वाल्टर लीफ** (Walter Leaf) और **प्रो. एडविन कैनन** (Edwin Cannan) जैसे अर्थशास्त्रियों ने यह मत प्रकट किया है कि बैंक साख का निर्माण नहीं कर सकते। इनका कहना है कि बैंक स्वयं साख के सृजन का कार्य नहीं करते वरन् यह कार्य तो बैंक के जमाकर्ताओं (depositors) द्वारा

प्रारम्भ किया जाता है। कारण, यह जमाकर्ता ही हैं जो कि बैंक में निक्षेप करके उसे मौद्रिक साधन प्रदान करते हैं और बैंक इनका एक भाग व्यापारियों को ऋण के रूप में इसलिए दे पाते हैं, क्योंकि सभी जमाकर्ता अपनी सम्पूर्ण जमाओं को एक ही समय पर बैंक से नहीं निकालते। अतः साख के सृजन का श्रेय बैंकों को न देकर जमाकर्ताओं को देना चाहिए। यदि ये लोग एक ही साथ अपनी समूची जमाएं बैंकों से निकलवाना प्रारम्भ कर दें तो साख निर्माण का कार्य सम्भव नहीं हो सकता।

उचित मत—आधुनिक बैंक प्रारम्भिक निक्षेपों के रूप में प्राप्त मुद्रा राशि की तुलना में कहीं अधिक राशि के ऋण प्रदान करने में समर्थ हो जाते हैं। इस आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बैंकों **में साख सृजन की शक्ति पाई जाती है। लीफ और कैनन के विचारों को केवल आंशिक रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है कि बैंक की साख निर्माण के कार्य में जमाकर्ताओं का सहयोग बहुत प्रोत्साहन देता है।**

बैंकों द्वारा साख निर्माण का महत्व
(SIGNIFICANCE OF CREDIT CREATION BY BANKS)

वर्तमान समाज में साख का महत्वपूर्ण स्थान है। आज का औद्योगिक एवं व्यावसायिक ढांचा पूर्ण रूप से साख पर आधारित है। इसी कारण साख को व्यापार का जीवन रक्त कहा जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि साख का प्रयोग आर्थिक जीवन के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह तो एक सामान्य बात है कि मुद्रा की मात्रा में उतार-चढ़ाव व्यावसायिक गतिविधियों को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। साख के निर्माण का भी व्यापारिक गतिविधियों पर वही प्रभाव पड़ता है जो मुद्रा का पड़ता है। साख की मात्रा में वृद्धि से कुल, मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि हो जाती है जिससे मूल्य और लाभ बढ़ने लगते हैं और व्यावसायिक तथा आर्थिक गतिविधियां बढ़ने लगती हैं। साख के प्रयोग के कारण ही पूंजी की गतिशीलता में वृद्धि होती है। अधिक साख के प्रयोग के कारण ही नकद मुद्रा के प्रयोग में काफी बचत होती है तथा मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान को सरलता से स्थानान्तरित किया जा सकता है। आजकल बैंक ड्राफ्ट की सहायता से हम बड़ी धनराशि अन्यत्र भेज सकते हैं। यह साख का ही जादू है कि बैंक थोड़े से नकद कोष के आधार पर बहुत बड़ी रकम उधार दे सकता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बैंकों द्वारा साख निर्माण का आर्थिक एवं व्यावसायिक जीवन में बहुत महत्व है।

साख निर्माण की सीमाएं
(LIMITATIONS OF CREDIT CREATION)

बैंकों द्वारा साख सृजन पर प्रभाव डालने वाले घटक (Factors Affecting Creation of Credit by Banks)

बैंकों द्वारा साख-सृजन की शक्ति असीमित नहीं है। उनकी इस शक्ति की कुछ सीमाएं हैं, जिनका वर्णन नीचे किया गया है :

(1) **बैंक में मुद्रा की मात्रा**—बैंक कितनी मात्रा में साख का निर्माण कर सकते हैं, यह देश में प्रचलित मुद्रा की मात्रा पर निर्भर रहता है। देश में मुद्रा की मात्रा जितनी अधिक होगी उतनी ही उस देश में साख निर्माण की शक्ति अधिक होगी क्योंकि अधिक मात्रा में मुद्रा प्रचलन में होने से बैंक के निक्षेप (Deposits) में वृद्धि होती है जिससे बैंक अधिक मात्रा में साख का निर्माण कर सकते हैं।

(2) **बैंकिंग सुविधाएं**—बैंकों द्वारा साख निर्माण का मूल आधार नकद कोष होते हैं। यदि नकद कोष की मात्रा में वृद्धि होती रहे तो साख तीव्र गति से बढ़ती है। प्रायः उन बैंकों की जमाएं अधिक होती हैं जो ग्राहकों को धनराशि जमा कराने, निकालने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने तथा भुगतान सम्बन्धी सुविधाएं अधिक मात्रा में प्रदान करते हैं। वर्तमान ग्राहक केवल ब्याज की दर के कारण अपनी रकम बैंक में जमा नहीं करना चाहता, वह लेन-देन सम्बन्धी सुविधाएं तथा व्यक्तिगत सेवाएं भी चाहता है। अतः बैंकिंग सुविधाएं बैंक की साख निर्माण नीति तथा व्यवस्था को प्रभावित करती हैं।

(3) **बैंकिंग आदत**—यद्यपि स्थान-स्थान पर बैंक की शाखाएं खुलने से जनता को बैंकों में धन जमा कराने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, परन्तु अविकसित देशों की जनता को बैंकों में रकम जमा कराने, उधार

लेने अथवा चैक, आदि द्वारा भुगतान कराने की आदत नहीं होती जिससे बैंक की पूंजी में कम अदल-बदल होती है और वह साख का निर्माण नहीं कर पाता है।

(4) **व्यापार एवं उद्योग का विकास**—बैंकों से अधिक लेन-देन व्यापारी एवं औद्योगिक वर्ग करता है, अतः जिन देशों अथवा क्षेत्रों में व्यापार तथा उद्योग प्रगतिशील हैं वहां बैंकों से धन की बहुत मांग की जाती है जिसके फलस्वरूप उन्हें अधिक साख निर्माण का अवसर मिलता है।

(5) **ब्याज दर**—बैंक की साख की मात्रा प्रायः ब्याज की दर पर भी निर्भर करती है। यदि ब्याज की दर ऊंची हो तो साख की मात्रा कम हो जाती है। इसके विपरीत, नीची ब्याज-दर प्रायः साख की मांग को प्रोत्साहित करती है और साख स्फीति हो जाने का भय रहता है। ब्याज की दर साख नियन्त्रण का एक महत्वपूर्ण साधन है।

(6) **बैंकों द्वारा रखा जाने वाला नकद कोष का अनुपात**—बैंकों द्वारा साख निर्माण की सीमा इस बात पर भी निर्भर रहती है कि उनके द्वारा रखा जाने वाला नकद कोषों का अनुपात क्या है? यदि कम मात्रा में नकद कोष रखे जाते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि बैंक अधिक मात्रा में ऋण दे सकते हैं तथा अधिक मात्रा में साख निर्माण कर सकते हैं। यदि यह अनुपात बढ़ा दिया जाता है तो बैंकों की साख निर्माण की क्षमता संकुचित हो जाती है।

(7) **राजनीतिक स्थिति**—यदि देश की राजनीतिक स्थिति (शासन-व्यवस्था) में स्थायित्व है तो देश का आर्थिक विकास दृढ़ एवं सुनियोजित रूप में होगा और साख में भी आवश्यकतानुसार वृद्धि होती रहेगी। किन्तु डांवाडोल राजनीतिक व्यवस्था होने पर आर्थिक प्रगति भी धीमी हो जायेगी और साख की कमी या वृद्धि होती रहेगी।

(8) **व्यावसायिक लाभ**—यदि व्यापार तथा उद्योग में लाभ की दरें ऊंची होंगी तो ऊंची दरों पर भी ऋण की मांग होगी और साख का तीव्र गति से प्रसार होगा। किन्तु यदि व्यवसाय के लाभ की दरें कम हैं तो साख की प्रगति सामान्य रहेगी।

(9) **सट्टे का जोर**—यदि देश में सट्टा करने वालों की क्रियाओं पर प्रतिबन्ध नहीं है तो सट्टा जोर पकड़ जाता है और बैंक तेज गति से साख का प्रसार करने लगते हैं (क्योंकि सट्टा करने के लिए जल्दी-जल्दी काफी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है) और फलस्वरूप साख स्फीति होने का भय रहता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बैंक साख का निर्माण करते हैं किन्तु उनकी साख निर्माण की क्षमता निरपेक्ष एवं असीमित नहीं है वरन् उसकी कुछ सीमाएं हैं। जब तक बैंकों के पास जमा राशियां उपलब्ध नहीं होतीं, वे साख का निर्माण नहीं कर सकते। यही नहीं, साख निर्माण के लिए यह भी आवश्यक है कि व्यापारी बैंकों से ऋण लेने के लिए तैयार रहें। इस सम्बन्ध में **प्रो. क्राउथर** का मत उल्लेखनीय है, "बैंक, हवा से ही मुद्रा का निर्माण नहीं करता वरन् सम्पत्ति के अन्य रूपों को मुद्रा में परिवर्तित कर देता है।"[1]

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. साख निर्माण क्या है? व्यापारिक बैंक किस प्रकार साख का सृजन करते हैं? साख निर्माण की सीमाएं बताइए।
2. "बैंक केवल मुद्रा व्यापारी ही नहीं, वे एक महत्वपूर्ण अर्थ में मुद्रा-उत्पादक भी हैं।" (सैयर्स)। इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. "जमा राशियां साख को जन्म देती हैं और साख जमा राशियों को।" इस कथन को समझाइए।
4. साख निर्माण से क्या आशय है? बैंकों द्वारा साख निर्माण के तरीकों को बताइए।
5. बैंकिंग प्रणाली द्वारा साख मुद्रा का निर्माण किस प्रकार होता है? साख मुद्रा निर्माण की क्या सीमाएं हैं?
6. साख निर्माण क्या है? बैंक किस प्रकार साख निर्माण करते हैं? स्पष्ट रूप से समझाइए।

1 "The bank do